

बहारे तहरीर

(पहला हिस्सा)



हमारे प्यारे नबी ﷺ की विलादत बारह रबीउल अव्वल को हुई

हमारे प्यारे नबी ﷺ की विलादत माहे रबीउल अव्वल की बारहवीं तारीख को हुई और इस पर हमारे पास कषरत से दलाईल मौजूद हैं। तारीखे विलादत में इख्तिलाफ भी है लेकिन जम्हूर के नज़दीक बारह रबीउल अव्वल ही दुरुस्त है। नीचे कुछ किताबों के हवाला जात पेश किये जाते हैं जिन में तारीखे विलादत बारह रबीउल अव्वल को ही करार दिया गया है।

- (1) سیرت ابن اسحاق به حواله الوفا، ص 87
- (2) سیرت ابن هشام، ج 1، ص 107
- (3) تاریخ الامم والملوک المعروف به تاریخ طبری، ج 2، ص 125
- (4) اعلام النبوة، ص 192
- (5) المستدرک للحاکم، ج 2، ص 603
- (6) عیون الاثر، ج 1، ص 33
- (7) تاریخ ابن خلدون، ج 2، ص 394
- (8) سیرت ابن خلدون، ص 81
- (9) المورد الروی للقاری، ص 96
- (10) محمد رسول اللہ، ج 1، ص 102
- (11) حجة اللہ علی العالمین، ج 1، ص 231
- (12) ما ثبت بالسنّة، ص 31
- (13) نور الابصار، ص 13
- (14) النعمۃ الکبری، ص 20

- (15) تاریخ اسلامی، ص 35
- (16) معارج النبوة، ج 1، ص 37
- (17) مدارج النبوة، ج 2، ص 18
- (18) سیرت حلبیہ، ج 1، ص 93
- (19) المواہب اللدنیہ، ج 1، ص 132
- (20) بلوغ الامانی، ج 2، ص 189
- (21) تاریخ الخمیس، ص 196
- (22) البدایہ والنہایہ، ج 2، ص 260
- (23) بیان المیلاد النبوی، ص 50
- (24) فتح الباری، ج 8، ص 130
- (25) فقہ السنۃ، ص 60
- (26) کتاب اللطائف، ص 230
- (27) سرور القلوب، ص 11
- (28) فتاویٰ رضویہ، ج 26، ص 411
- (29) اسلامی زندگی، ص 106
- (30) فتاویٰ نعیمیہ، ص 46
- (31) تبرکات صدر الافاضل، ص 199
- (32) رسائل کاظمی، ص 2
- (33) سیرت رسول عربی، ص 43
- (34) ذکر الحسنین، ص 116

(35) فتاویٰ مہریہ، ص 110

(36) جنتی زیور، ص 473

(37) دین مصطفیٰ، ص 84

(38) محمد نور، ص 56

(39) کتاب فارسی، ص 80

(40) انوار شریعت، ص 9

(41) الخطیب، ص 121

(42) توارخ حبیب الہ، ص 13

(43) جمال رسول، ص 11

(44) رسالہ میلاد نمبر، ص 24

(45) پیش لفظ تصفیہ مابین سنی و شیعہ

(46) فیصلہ ہفت مسئلہ، ص 4

دیوبندیوں، وہابیوں اور شیعوں کی کتب سے ثبوت:

(47) میلاد النبی از اشرف علی تھانوی، ص 90

(48) سیرت خاتم الانبیاء، ص 19، 20

(49) ہادی عالم، ص 43

(50) ہفت روزہ، مارچ 1977، ص 7، 18

(51) قصص النبیین، ج 5، ص 27

(52) نفیہ العرب، ص 141

- (53) خاتون پاکستان رسول نمبر، ص 36 (53)
- (54) رحمت عالم، ص 13 (54)
- (55) ماہنامہ محفل لاہور، مارچ 1981، ص 65 (55)
- (56) خاتون پاکستان رسول نمبر، ص 839 (56)
- (57) الشمامۃ الغنبریہ، ص 8 (57)
- (58) رسول اکرم ﷺ، ص 21، 22 (58)
- (59) اکرام محمدی، ص 270 (59)
- (60) سیرۃ الرسول، محمد بن عبد الوہاب (60)
- (61) سید الکونین، ص 60 (61)
- (62) حیاۃ القلوب، ج 2، ص 112 (62)
- کتب عامہ اور تاریخ ولادت:
- (63) سید الوری، ج 1، ص 88 (63)
- (64) سیرت احمد مجتبیٰ، ج 1، ص 5، 147، 149 (64)
- (65) تاریخ مکۃ المکرمہ، ج 1، ص 211 (65)
- (66) الامین ﷺ، ص 191 (66)
- (67) محمد سید لولاک، ص 118 (67)
- (68) ہمارے پیغمبر، ص 219 (68)
- (69) ہمارے رسول پاک، ص 43 (69)

- (70) کتاب شان محمد، ص 234
- (71) محمد رسول اللہ، ص 30
- (72) شواہد النبوة، ص 52
- (73) معلومات عامہ، ص 61
- (74) نور کامل، ص 36
- (75) اسلامی تہذیب و تمدن، ص 347
- (76) ماہنامہ ترجمان اولیٰ، ص 71
- (77) ماہنامہ نور الحبیب، اکتوبر 1989، ص 41
- (78) سیرت کونز، ص 18
- (79) موضع القرآن، ص 33
- (80) کیلنڈر از علامہ اکرم رضوی
- (81) جان جاناں، ص 117
- (82) علموا اولادکم محبت رسول اللہ، ص 99
- (83) خاتم النبیین، ص 118
- (84) حیات محمد ﷺ، ص 26
- (85) ماہنامہ جام عرفان، اکتوبر 1984
- (86) ہفت روزہ الفقیہ، میلاد نمبر 1932، ص 140
- (87) نورانی شمع ترجمہ قرآن مجید، ص 13
- (88) تاریخ اسلام از محمود الحسن، ص 31
- (89) تاریخ ملت، ص 34

- رسالت مآب، ص 9 (90)
- خاتم المرسلین، ص 78 (91)
- تفسیر ضیاء القرآن، ج 5، ص 665 (92)
- حاشیہ الروض الانف، ج 1، ص 107 (93)
- ضیاء حرم، عید میلاد النبی نمبر، ص 184 (94)
- سیرت سرور عالم، ص 93 (95)
- خطبات الاحمدیہ، ص 12 (96)
- اسلام کی پہلی عید، ص 33 (97)
- فضیلت کی راتیں، ص 27 (98)
- اشرف السیر، ص 146 (99)
- سیرت رسول اکرم، ص 7 (100)
- ماہنامہ التزکیہ، جولائی 2002، ص 11 (101)
- جواز الاختقال، ص 12 (102)
- برکات میلاد شریف، ص 3 (103)
- ہمارے حضور، 17 (104)
- زریریں فرمودات، ص 401 (105)
- بھاگوات پران، باب 2، شلوک 18 بہ حوالہ جان جانان (106)
- الدر المنظم، ص 89 (107)
- انوار شریعت، ص 9 (108)
- قومی دائجسٹ، خصوصی نمبر 1989، ص 50 (109)

- الخطیب، ص 121 (110)
- فقہ السیرۃ، ص 60 (111)
- نشر الطیب از تھانوی، ص 22 (112)
- حیات رسول، ص 92 (113)
- محبوب کے حسن و جمال کا منظر، ص 11 (114)
- عید میلاد النبی کی شرعی حیثیت، ص 1 (115)
- کتب نصاب، انگریزی کتب اور بارہویں تاریخ:
- خالد دینیات برائے جماعت سوم (116)
- دینیات برائے جماعت پنجم، ص 55 (117)
- الکتب العربی برائے جماعت ہفتم، ص 16 (118)
- اردو کی ساتویں کتاب، ص 17 (119)
- اردو کی آٹھویں کتاب، ص 3 (120)
- اردو کی آٹھویں کتاب، ص 18 (121)
- اسلامیات نہم و دہم، ص 88 (122)
- مطالعہ پاکستان نہم و دہم، ص 119 (123)
- اسلامیات لازمی بی اے (124)
- معیار اسلامیات لازمی بی اے (125)
- اردو، دائرہ معارف اسلامیہ، 12، 19 (126)
- مقالہ سیرت محمد رسول اللہ ﷺ، ص 12 (127)

انگلش کی آٹھویں، ص 1، پنجاب ٹیکسٹ بک بورڈ (128)

انگلش کی دسویں، ص 5 (129)

سیرت رسول اللہ، آکسفورڈ یونیورسٹی لندن، ص 69 (130)

دی لائف آف محمد، ص 23 (131)

محمدی فائنل میسنجر، ص 50 (132)

پروس پیکیٹس، 2010، ص 162 (133)

(ملخصاً: بارہ ربیع الاول ایک جامع تحقیق)

اُبدے مُستفرا

مِلاد پر خُوشی منانے کا اُنوِخا اُنْداز

شاہ ولیزُلاّہ مُہدّی سے دِہلوی کے والید -ع- گِرامی شاہ اَبدُورْہیْم مُہدّی سے دِہلوی اَلْہِیْہِیْمَا مِلاد-ع-مُستفرا ﷺ کی خُوشی میں خانا بنوا کر لوگوں میں تکرّسیم کرِوا یا کرتے تھے۔

اِک مرْتبا اِتِفراکُن کُحّ مَیْسر نا آ سکا کے کُحّ پکا کر نِیاژ دِلِوا سکے لِہاژا تھوڑے سے بھنے ہوئے چنے اور کُند پر اِکْتِفا کرتے ہوئے نِیاژ دِلِوا دی۔

اُسی رات ہُجُور-ع-اَکْرَم ﷺ کی جِیا رت ہُئی، آپ ﷺ کی بارِگاہ میں کِسم-کِسم کے خانا پِش کِیے جا رہے تھے، اِسی دُوران وہ بھنے ہوئے چنے اور کُند بھی پِش کِیے گئے، اِتِہا اِی خُوشی و مَیْسر سے آپ ﷺ نے وہ کُبوْل فرما اے اور اِپنی ترَف لانے کا اِشا را فرما یا اور تھوڑا سا اُس میں سے تِناوُل فرما کر باقی اَسْہاب میں تکرّسیم فرما دیا۔

(ملخصاً: اِنْفاس العارِفین، ص 118، 119، فرید بک سٹال لاہور)

हमे चाहिए के इख्लास के साथ अपने नबी पाक ﷺ की विलादत की खुशी मनायें ताकी हुजूर ﷺ क़ुबूल फ़रमा लें।

खुशी के नाम पर नाजायज़ कामो का इस्तेकाब करना ये, हुजूर ﷺ की नाराज़गी का सबब है।

अल्लाह त्आला हमे बुजुर्गो के नक्शे कदम पर चलने की तौफीक अता फरमाये
आमीन

अब्दे मुस्तफ़ा

मीलादुन नबी की फज़ीलत पर बे असल रिवायात

मीलाद -ए- मुस्तफ़ा ﷺ पर खुशियाँ मनाना और इस पर रक़म खर्च करना एक जायज़ व मुस्तहसन अमल है, लेकिन इसकी फज़ीलत बयान करने के लिये किसी गैर साबित रिवायत को बयान करना हरगिज़ दुरुस्त नहीं।

मीलादुन नबी पर रक़म खर्च करने की फज़ीलत पर हज़रते अबू बकर सिद्दीक रदिअल्लाहु त्आला अन्हु का क़ौल बयान किया जाता है कि "जो शख्स मीलाद पर एक दिरहम खर्च करता है वो क़यामत के दिन जन्नत में मेरे साथ होगा" इसके अलावा भी कुछ मिलते जुलते अक़्वाल खुल्फ़ा-ए-राशिदीन और दीगर बुजुर्गाने दीन के हवाले से बयान किये जाते हैं।

हज़रत मौलाना मुहम्मद इरफ़ान मदनी हफिज़हुल्लाह (अल मुताख़सिस फिल फ़िक़्हे इस्लामी) लिखते हैं कि (हज़रत अबू बकर सिद्दीक रदिअल्लाहु त्आला अन्हु की तरफ़ मन्सूब) मज़क़ूर बाला रिवायत हदीस की किसी मुस्तनद किताब में नहीं मिलती, ये रिवायत "नैमतुल कुबरा" किताब में मौजूद है और ये किताब अल्लामा इब्ने हज़र मक्की अलैहिर्रहमा की तरफ़ मनसूब है, लेकिन असल किताब "नैमतुल कुबरा" जो अल्लामा

इब्ने हजर मक्की की है उसमे ये रिवायत मौजूद नहीं है जिससे साबित होता है कि ये किताब जिसमें ये रिवायत है, ये अल्लामा इब्ने हजर मक्की की असल किताब नहीं है।

हज़रत अल्लामा अब्दुल हकीम शरफ क़ादरी अलैहिर्रहमा ने इसके जो जवाबात दिये हैं उनमे से चन्द पेशे खिदमत है :-

(1) अल्लामा इब्ने हजर मक्की दसवीं सदी के बुजुर्ग हैं तो लाज़मी अम्र है कि उन्होने मज़कूरा बाला रिवायत सहाबा ए किराम से नहीं सुनी लिहाज़ा वो सनद मालूम होनी चाहिये जिस की बिना पर अहादीस रिवायत की गयी है ख्वाह वो सनद ज़ईफ़ ही क्यों ना हो या इन रिवायत का कोई मुस्तनद माखज़ मिलना चाहिये।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रहीमहुल्लाह फरमाते हैं कि अस्नाद दीन से हैं, अगर सनद ना होती तो जिस के दिल में जो आता कह देता।

(2) हज़रत अबू हुरैरा रदिअल्लाहु त्आला अन्हु फरमाते हैं कि नबी -ए- करीम ﷺ ने इरशाद फरमाया कि मेरी उम्मत के आखिर में ऐसे लोग होंगे जो तुमको ऐसी हदीसों बयान करेंगे जो ना तुमने सुनी होगी और ना तुम्हारे आबा ने, तुम उनसे दूर रहना!

सवाल ये है कि खुल्फा-ए-राशिदीन रदिअल्लाहु त्आला अन्हुम और दीगर बुजुगनि दीन के ये इरशादात इमाम अहमद रज़ा खान फाजिले बरेलवी, शैख अब्दुल हक़ मुहदिस दहेल्वी, इमाम रब्बानी मुजद्दिद-ए-अल्फे सानी, मुल्ला अली कारी, इमाम सुयूती, अल्लामा नब्हानी और दीगर उलमा-ए-इस्लाम की निगाहों से क्यूँ पोशीदा रहे? जबकि इन हज़रात की वुस'अत -ए- इल्मी के अपने और बेगाने सब ही मोतरिफ़ हैं।

(3) अल्लामा यूसुफ नब्हानी रहीमहुल्लाह ने जवाहिरुल बिहार की तीसरी जिल्द में अल्लामा इब्ने हजर मक्की के असल रिसाले "नैमतुल कुब्रा" की तल्खीस नक़ल की है कि जो खुद अल्लामा इब्ने हजर मक्की ने तैयार की थी, असल किताब में हर बात पूरी सनद के साथ बयान की गई थी, तल्खीस में सनदों को हज़फ़ कर दिया गया है।

अल्लामा इब्ने हजर फरमाते है कि मेरी ये किताब मनगदंत रिवायात और मुल्हिद व मुफ्तरी लोगों के इन्तेसाब से खाली है जबकि लोगों के हाथों में जो मीलाद नामे पाये जाते हैं इनमे अकसर झूठी व मौजू रिवायत मौजूद हैं।

इस किताब में खुल्फा -ए- राशिदीन और दीगर बुजुगानि दीन के मज़कूरा बाला अक्वाल का नामो निशान तक नहीं है

इससे नतीजा निकालने में कोई दुशवारी नहीं आती कि ये एक जाली किताब है जो अल्लामा इब्ने हजर मक्की की तरफ मनसूब कर दी गयी है।

अल्लामा सैय्यद मुहम्मद आबिदीन शामी (साहिबे रद्दुल महतार) के भतीजे अल्लामा सैय्यद अहमद शामी ने असल नैमतुल कुब्रा की शरह लिखी है जिसके मुत'अद्द इक्तिसाबात अल्लामा नब्हानी ने जवाहिरुल बिहार जिल्द सोम में नक़ल किये है, इसमें भी खुल्फा -ए- राशिदीन के मज़कूरा वाला अक्वाल का कोई ज़िक्र नहीं है।

(مجله البرهان الحق، جنوری تا مارچ 2012، ص 911)

अब्दे मुस्तफ़ा

आला हज़रत और 8 रबीउल अव्वल

जब आशिकाने मुस्तफ़ा अपने नबी ﷺ की आमद की खुशियां मनाते हैं तो कुछ कालिमा पढ़ने वालों को ही बहुत तकलीफ़ होती है ओर उन की ये परेशानी ऐतेराज़ बन कर हमारे सामने आती है।

रबीउल अव्वल की बारहवी तारीख को हुज़ूर -ए- अकरम ﷺ, की आमद का जश्न मनाया जाता है तो इस पर ये ऐतेराज़ किया जाता है के नबी -ए- करीम ﷺ की विलादत तो 8 तारीख को हुई थी जैसा के आला हज़रत ने लिखा है तो फिर बारह 12 तारीख को जश्न क्यों?

हकीकत में इसे ही कहते हैं "खिसियानी बिल्ली खम्बा नोचे" लेकिन यहां तो खम्बा भी नहीं!

अगर हम इस बात को तस्लीम भी कर लें के आला हज़रत ने 8 रबीउल अव्वल को ही दुरुस्त करार दिया है और 8 ही तारीख को जश्न मनाना शुरू भी करें तो क्या इनको तकलीफ नहीं होगी? बिल्कुल होगी ओर ये कहेंगे के जब जमहूर उलमा का क़ौल 12 रबीउल अव्वल है तो फिर 8 तारीख को जश्न क्यों?

दर असल मसला यहां तारीख का नहीं है बल्कि मक़सूद मुसलमानों को एक कारे खैर से दूर करना है।

हमें चाहिए के ऐसे लोगों की बातों को एक कान से सुनें और दूसरे कान से निकाल दें, ये लोग हमारे बुजुर्गों बिल खुसुस आला हज़रत रहीमहुल्लाह की इबारात में खयानत करते हैं और आधी अधूरी बात को दिखा कर अवाम को गुमराह करना चाहते हैं

आला हज़रत रहीमहुल्लाह के मुताल्लिक ये कहना के उनके नज़दीक हुज़ूर -ए- अकरम ﷺ की तारीख ए विलादत 8 रबीउल अव्वल है, ये क़तई दुरुस्त नहीं और इस पर ज़्यादा कुछ ना केह कर हम उनके एक शेर को नक़ल करने पर इकतेफा करते हैं

बारहवीं के चांद का मुजरा है सजदा नूर का,
बाराह बुर्जों से झुका इक इक सितारा नूर का
(इमाम ए अहले सुन्नत, आला हज़रत अलैहीर्रहमा)

अब्दे मुस्ताफ़ा

पेट भर कर खाना भी बिद्अत है!

उम्मुल मुमिनीन, सय्यदा आईशा सिद्दिका रदीअल्लाहु त्आला अन्हा फ़रमाती हैं के रसूलुल्लाह ﷺ के (दुनिया से तशरिफ़ ले जाने के) बाद जो बिद्अत सबसे पहले ज़ाहिर हुई वो शिकम सैरि (पेट भर कर खाना) है।

(احياء علوم الدين، ربع المملكات، كتاب كسر الشهوتين، الفلانة الخامسة، ص 1010، طوار الكتب العربي بيروت، س 1429 هـ)

वहाबियों को चाहिए के मिलाद शरीफ़ ओर दिगर मामुलाते अह्ने सुन्नत पर बिद्अत बिद्अत के फ़तवे लगाने के बजाए शिकम सैरि जैसी हकीकी बिद्अत के खिलफ़ आवाज़ उठाए!

और खुद भी कम खाने कि सुन्नत पर अमल करे ताकि आपके दिमागों को कुछ हवा लगे ,सोचने समझने कि सलाहियत बेदार हो और उम्मत पर ज़ालिमाना फ़तवे दाग़ने से बाज़ आ जाए।

अल्लामा लुकमान शाहिद साहब किब्ला

कोई खुश कोई गमगीन

हुजुर -ए- अकरम ﷺ की आमद पर सिवाए कुछ बदनसीबों के सभी खुश हैं और खुशीया मना रहे हैं।

निसार तेरी चहल पहल पर हज़ार ईदें रबीउल अव्वल

सिवाए इबलीस के जहान में सभी तो खुशीया मना रहे हैं!

कोई आमिना के लाल ﷺ की मुहब्बत में उनको याद कर के खुश हो रहा है तो किसी के लिए ये यादें तकलीफ़ का सबब बनी हुई हैं। ये भी मेरे आका ﷺ का जलवा है के आप ﷺ कि फ़ूल सी खुबसूरत यादें गद्दारों के दिल में कांटा बन कर चुभ रही है।

आला हज़रत क्या खूब फ़रमाते हैं,
कोई जान बस के महक रही किसी दिल में इससे खटक रही
नहीं इसके जलवे में यक रही कहीं फ़ूल है कहीं खार है

मेरे इमाम फ़रमाते हैं के किसी ने हुज़ूर -ए- अकरम ﷺ की मुहब्बत को अपनी जान में बसाया हुआ है और आपकी यादे वफ़ादारों के दिलों में जान बन कर महक रही है और कुछ वो बदबख्त हैं के जिनको इससे तकलीफ़ हो रही है यानी आपके जलवे एक काम नहीं करते बल्कि दो काम करते हैं, वफ़ादारों को आपकी यादों से सुकून हासिल होता है और ग़द़ारों को इज़ा पहुंचती है।

अब्दे मुस्तफ़ा

मीलाद -ए- मुस्तफ़ा पर शैतान का रोना पीटना

जब नबीय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, इमामुल अम्बिया, सरकारे मदीना ﷺ की पैदाइश हुई तो शैतान लईन ने रोना शुरू कर दिया और ये कोई वाईज़ाना बात नहीं है बल्कि एक हकीक़त है। उस के चीखो पुकार करने के दलाईल हसबे ज़ेल हैं :-

- (1) تفسیر وقع تحت سورہ فاتحہ
- (2) تفسیر ابن مخلص تحت سورہ فاتحہ
- (3) تفسیر قرطبی تحت سورہ فاتحہ
- (4) تفسیر در منشور للسيوطی، ج 1، ص 17
- (5) کتاب العظيمة، ابوالشيخ، ص 428
- (6) معجم مقاييس اللغة، ابن فارس، ج 2، ص 380

- (7) شرف المصطفى، ج 1، ص 347
- (8) المختص الملف الاول، ج 1، ص 394
- (9) حلية الاولياء، ج 3، ص 341
- (10) غنية الطالبين، باب فضيلت
- (11) الروض الانف، ج 1، ص 74، ص 278 (12)
- (13) مولد العروس، ص 3
- (14) الاكتفاء بما تضمنه من مغازي رسول الله ﷺ، ج 1، ص 98
- (15) الاحاديث المختارة، ج 4، ص 114
- (16) عيون الاثر، ج 1، ص 34
- (17) البدايه والنهايه، ج 3، ص 42
- (18) السيرة النبوية لابن كثير، ج 1، ص 212
- (19) المختصر الكبير في سيرة الرسول، ج 1، ص 7
- (20) سبل الهدى والرشاد، ج 1، ص 35 و ج 2، ص 218 (21)
- (22) السيرة الحلبية، ج 1، ص 99
- (23) الدر المنظم في مولد النبي الاعظم، ص 82
- (24) ضياء النبي، ج 2، ص 56
- (ملخصاً: لمعات مصطفى ﷺ، ص 41، 42)

अब्दे मुस्तफ़ा

सहाबा और हुज़ूर के नालैन

सहाबा -ए- किराम रदिअल्लाहो त'आला अन्हुम ने हुज़ूर ﷺ की मुहब्बत में जो कारनामे अंजाम दिए हैं उन को आइना बना कर देखा जाये तो हम भी अपने किरदार को आसानी से संवार सकते हैं।

सहाबा-ए-किराम की ज़िंदगीयो का मुता'अला किया जाये तो मालूम होता है के उन्हें अपने नबी ﷺ से निस्वत रखने वाली हर शै से मुहब्बत थी।

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मस'उद रदिअल्लाहो त'आला अन्हु नबी -ए- करीम ﷺ के नालैन को अपने पास रखा करते थे जब नबी -ए- करीम ﷺ मजलिस बर्खास्त फरमाते तो आप हुज़ूर ﷺ को नालैन पहनाया करते थे और जब उतारते तो आप नालैन को झाड़ कर अपनी आस्तीन में रख लिया करते थे और ता कियाम -ए- सानी अपने पास ही रखते।

(ملخصاً: جواهر البحار في فضائل النبي المختار، ج 1، ص 41، 42، طبع في دار القرآن الكريم، لاہور، س 2013)

अब्दे मुस्तफ़ा

क्या एक बुढ़िया हमारे नबी पर कूड़ा डालती थी?

हुज़ूर -ए- अकरम, सय्यद -ए- आलम ﷺ के अखलाक़ो किरदार का तज़क़िरा करते हुए एक वाक़िया बयान किया जाता है के एक बूढ़ी औरत थी जो रोज़ाना हमारे नबी ﷺ पर कूड़ा फेंका करती थी मगर हमारे नबी ﷺ उसे कुछ नहीं कहते थे।

वो बुढ़िया जब बीमार पड़ी तो हुज़ूर ﷺ उसकी ईयादत के लिए तशरीफ़ ले गए और उसे दुआएं भी दी, जब उस बुढ़िया ने ये करीमाना अंदाज़ देखा तो इमान ले आयी!

ये वाक़िया इतना मशहूर है के बच्चों से ले कर बूढ़ों तक को जुबानी याद है।

اگر کسی مکرریر کو تکریر کے لیے "اخراج-ا-مستفرا" مہجڑ دیا جاے تو اس ریاات کو بیان کیے بنا اسکی تکریر ہی مومل نہیں ہوگی اور ہو گی تو یہ انوخی بات ہے۔

کھ لوگوں کی زبانوں پر اک جملا رریش کرتے رتا ہے کے "اسلام تلوار سے نہیں فایا" اور اس جملة کے ساآ یہ واکیا اسی جڑا ہوا ہے گیا اک کے ررے دوسرا اڈرا ہے۔ نیڑ اک تبکا جو کتا ہے کے کسی کو برا بلا نہیں کنا چہیے، و بھی اس واکیے کو ہفڑ ررر کرتا ہے اور اسے دلیل بنا کر کتا ہے کے دےو نبی نے تو اپنے اور کڑا فیکنے والی بڑیا کی بھی برا بلا نہیں کنا لہاڑا ہمیں بھی کسی کو....الرا۔

ہم آپکو بتانا چاہتے ہیں کے یہ ریاات ہدیس کی کسی کتاآ میں مہجڑ نہیں! اگر ہے تو دیاڑا جاے۔

اسی ریاات کے مٹالیکر اک وسیال مٹالا بوجور، خلیفا -ا- ہڑر مٹتے آڑم -ا- ہند، شارہ بڑاری، ہڑرت اللاما مٹتی شریفول ہک امجدی الہرہما سے سوال کیا گیا جسکے وواب میں آپ رهمهوللاہ نے لیا کی کڑا کرکٹ ڈالنے کی ریاات اس وکرت یا د نہیں ہے (لہاڑا) اسکے رے میں کھ نہیں کھ سکتا۔

(فتاویٰ شارح بخاری، ج 1، ص 415)

مجاہد -ا- اہلے سترت، ہڑرت اللاما رادیم ہسین رڑوی ساہب کربلا فرماتے ہیں کے یہ ریاات مہجڑ ہے اور انگریزوں نے ڈی ہے۔

(علامہ خادم حسین رضوی صاحب قبلہ کے بیان سے ماخوذ)

اڈے مستفرا

उलमा का इहतिराम अल्लाह और रसूल का इहतिराम है

फकीह -ए- मिल्लत, हज़रत अल्लामा मुफ्ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी रहीमहुल्लाह लिखते हैं कि हज़रत जाबिर रदिअल्लाहु त्आला अन्हो से रिवायत है :-

اکرموا العلماء فانهم ورثة الانبياء فمن اکرمهم فقد اکرم الله ورسوله

(کنز العمال، ج 10، ص 78)

तर्जुमा : आलिमों की इज़्ज़त करो इसलिये कि वो अम्बिया के वारिस हैं, जिसने इनकी इज़्ज़त की तहकीक़ उसने अल्लाह और रसूल अज़्ज़वजल्ला व ﷺ की इज़्ज़त की

(انظر: فضائل علم و علماء، ص 65)

इस रिवायत में उलमा के इहतिराम को अल्लाह और रसूल का इहतिराम करार दिया गया है! अब जो लोग उलमा की तौहीन करते हैं वो ज़रा गौर करें कि क्या करते हैं

अब्दे मुस्तफ़ा

800 जिल्दों पर मुश्तमिल किताब

हम अगर सही से एक किताब लिखना चाहे तो सालो का वक़्त सिर्फ़ मवाद जमा करने में गुज़र जाता है लेकिन कुछ हस्तियां ऐसी भी गुज़री हैं जिन्होंने मैदान -ए- तसनीफ़ में ऐसी धूम मचाई है के दुनिया उन्हें भूल नहीं सकती।

चुनांचे अल्लामा इब्रे जौज़ी रहिमहुल्लाह लिखते हैं के अबुल वफ़ा बिन अकील अल्लाह का वो बन्दा है जिसने 80 फुनून के बारे में किताब लिखी है और इन की एक किताब

800 जिल्दों में है और कहा जाता है के दुनिया में लिखी जाने वाली किताबों में ये सबसे बड़ी किताब है!

(ملخصاً: علم اور علما کی اہمیت، ص 20، شیخ الحدیث والتفسیر مفتی محمد قاسم قادری حفظہ اللہ، مکتبہ اہل سنت پاکستان)

अब्दे मुस्तफ़ा

30,000 अवराक़ (पन्नों) की तफसीर

एक दिन इमाम इब्ने जरीर रहीमहुल्लाह ने अपने शागिर्दों से फरमाया कि अगर मैं क़ुरान की तफसीर लिखूँ तो तुम पढ़ोगे?

शागिर्दों ने कहा कि कितनी बड़ी तफसीर होगी!

फरमाने लगे कि 30,000 (तीस हज़ार) अवराक़ (पन्नों) पर मुश्तमिल होगी!

शागिर्द कहने लगे कि इतनी लम्बी तफसीर पढ़ने के लिये इतनी लम्बी उम्र कहां से लायेंगे?

फिर इमाम इब्ने जरीर रहीमहुल्लाह ने तीन हज़ार अवराक़ पर मुश्तमिल तफसीर लिखी (अल्लाहु अकबर)

(متاع وقت اور کاروان علم، ص 184 به حوالہ علم اور علما کی اہمیت، ص 20، شیخ الحدیث والتفسیر مفتی محمد قاسم قادری حفظہ اللہ، مکتبہ اہل سنت پاکستان)

अब्दे मुस्तफ़ा

इब्लीस की बेटी और दामाद

हज़रते सय्यिदुना अली खव्वास रहमतुल्लाही त्आला अलैह फरमाते हैं कि पूरी दुनिया इब्लीस लईन की बेटी है और इससे मुहब्बत करने वाला हर शख्स उसकी बेटी का खाविन्द है लिहाज़ा इब्लीस अपनी बेटी की खातिर दुनियादार शख्स के पास आता रहता है।

(عهودالمحمدية، قسم المامورات، ص 125 به حواله الحريقة الندية شرح الطريقة المحمدية، ج 1، ص 136)

कहीं हम भी दुनिया से मुहब्बत करके इब्लीस के दामाद तो नहीं बन बैठे?

आज हमारे पास दुन्यावी इल्म है दीनी नहीं, अँग्रेज़ी बोलना जानते हैं लेकिन अरबी पढ़ना नहीं, घर में गाड़ियां, सोफ़ा, ए सी, फ्रिज वगैरह है मगर दीनी किताबें नहीं!!!

कहीं हम सही में इब्लीस के दामाद तो नहीं?

अब्दे मुस्तफ़ा

इमाम कस्तलानी और मीलाद

शारहे बुखारी, इमाम कस्तलानी अलैहिर्रहमा फरमाते हैं कि हुज़ूर ﷺ की पैदाइश के महीने में अहले इस्लाम हमेशा से महेफिलें मुनक्किद करते चले आये हैं और खुशी के साथ खाने पकाते रहे और दावत -ए- त्आम करते रहे हैं और इन रातों में अनवा -ओ- अक्रसाम (तरह तरह के) खैरात करते रहे और सुरुर ज़ाहिर करते चले आये हैं और नेक कामों में हमेशा ज़्यादाती करते रहे हैं और हुज़ूर ﷺ के मौलिद -ए- करीम की किरात का एहतेमाम -ए- खास करते रहे हैं जिनकी बरकतों से इन पर अल्लाह त्आला का फ़ज़ल ज़ाहिर होता रहा है और इसके खवास से ये अम्र मुजर्रब है के इनिकादे महफिले मीलाद

उस साल में अमन -ओ- अमान का सबब होता है और हर मक़सूद व मुराद पाने के लिए जल्दी आने वाली खुशख़बरी होती है तो अल्लाह त्आला उस शख्स पर बहुत रहमतें फरमाये जिसने माहे मीलाद मुबारक की हर रात को ईद बना लिया ताकि ये ईद मीलाद सख्त तरीन इल्लत हो जाये उस शख्स पर जिसके दिल में मर्ज़ व इनाद है।

अल्लामा इब्ने हाज ने मदख़ल में तवील कलाम किया है उन चीज़ों के इंकार करने में जो लोगों ने बिद'अते और नफ़्सानी ख्वाहिशें पैदा कर दी हैं और आलात -ए- मुहर्रमा के साथ अमल -ए- मौलूद शरीफ में ग़िना को शामिल कर दिया है तो अल्लाह त्आला उनको उनके क़स्द -ए- जमील पर सवाब दे और हमें सुन्नत की राह चलाये, बेशक वो हमें काफी है और बहुत अच्छा वकील है।

(मواهب اللدنیة، ج 1، ص 27، مطبوعه مصر)

अल्लामा कस्तलानी अलैहिर्रहमा की इस इबारत से हस्बे ज़ेल उमूर साबित हुए:-

- (1) माहे मीलाद (रबीउल अव्वल) में इनिकादे महफिले मीलाद अहले इस्लाम का तरीका रहा है।
- (2) खाने पकाने के एहतेमाम, अनवा -ओ- अक़साम के खैरात व सदक़ात माहे मीलाद की रातों में अहले इस्लाम हमेशा करते रहे हैं।
- (3) माहे रबीउल अव्वल में खुशी व मसरत व सुरूर का इज़हार शिआर -ए- मुस्लिमीन है।
- (4) माहे मीलाद की रातों में ज़्यादा से ज़्यादा नेक काम करना मुसलमानों का पसंदीदा तरीका चला आ रहा है।
- (5) माहे रबीउल अव्वल में मीलाद शरीफ पढ़ना और किरात -ए- मीलादे पाक का एहतेमाम -ए- खास करना मुसलमानों का महबूब तर्ज़े अमल है।
- (6) मीलाद की बरकतों से मीलाद करने वालों पर अल्लाह त्आला का फ़ज़ले अमीम हमेशा से ज़ाहिर होता चला आया है।

(7) महफिल -ए- मीलाद के खवास से ये मुजरब खास्सा है के जिस साल में महफिल -ए- मीलाद मुनक्किद की जायें वो तमाम साल अमनो अमान से गुज़रता है।

(8) इनिकादे महफिले मीलाद मक़सूद व मतलब पाने के लिए बुशरा -ए- आजीला (जल्द आने वाली खुशखबरी) है।

(9) मीलाद मुबारक की रातों को ईद मनाने वाले मुसलमान अल्लाह त्आला की रहमतों के अहल हैं।

(10) रवीउल अव्वल में मीलाद शरीफ की महफिलें मुनक्किद करना और माहे मीलाद की हर रात को ईद बनाना यानी ईद -ए- मीलाद मनाना उन लोगों के लिये सख्त मुसीबत है जिनके दिलों में निफाक़ का मर्ज़ और अदावते रसूल की बीमारी है।

(11) अल्लामा इब्ने हाज ने मद्खल में जो इन्कार किया है वो इनिकादे महफिले मीलाद पर नहीं बल्कि उन बिद'आत और नफ्सानी ख्वाहिशात पर है जो लोगों ने महफिले मीलाद में शामिल कर दी थी, आलाते मुहर्मा के साथ गाना बजाना मीलाद शरीफ की महफिलों में शामिल कर दिया गया था, ऐसे मुनकिरात पर साहिबे मद्खल ने इन्कार फरमाया और ऐसे नाजायज़ उमूर पर हर सुन्नी मुसलमान इन्कार करता है।

साहिबे मद्खल की इबारात से धोखा देने वालों को मालूम होना चाहिये कि इमाम क्रस्तलानी ने उनका ये तिलिस्म भी तोड़ फोड़कर रख दिया है।

अल्लामा शैख इस्माईल हक्की रहीमहुल्लाह फरमाते हैं कि इमाम जलालुद्दीन सुयूती ने फरमाया कि हुज़ूर ﷺ की विलादते बा स'आदत पर शुक्र ज़ाहिर करना हमारे लिये मुस्तहब है।

(تفسير روح البیان، ج 9، ص 25)

(ماخوذ از میلاد النبی، غزالی زماں، علامہ سید احمد سعید کاظمی رحمہ اللہ)

अब्दे मुस्तफ़ा

इसे कहते हैं दीन की खिदमत

इमाम शारानी रहीमहुल्लाह लिखते हैं कि हाफ़िज़ इब्ने शाहीन की मुसद्द फ़िल हदीस 1600 जिल्दों पर मुश्तमिल है!

और लिखते हैं कि उन्होंने जो क़ुरआन की तफ़सीर लिखी है वो 1000 जिल्दों पर मुश्तमिल है। और इसके इलावा आपकी 330 किताबें हैं।

बयान किया गया है कि शैख अब्दुल गफ़्फ़ार क़ौसी ने मज़हबे शाफ़यी के बयान में 1000 जिल्दें तस्वीफ़ फरमायी।

अल्लामा इब्ने जौज़ी लिखते हैं कि अबुल वफ़ा बिन अक़ील की एक किताब 800 जिल्दों में है और आपने 80 फुनून पर किताबें लिखी हैं।

बयान किया गया है कि शैख अबुल हसन अश'अरी ने 600 जिल्दों की एक तफ़सीर लिखी है।

शैखे अकबर की तफ़सीर 100 जिल्दों में है।

इमाम इब्ने जरीर ने अपने शागिर्दों से फरमाया था कि अगर मैं क़ुरआन की तफ़सीर लिखूं तो वो 30000 अवराक़ पर मुश्तमिल होगी।

इमाम मुहम्मद की तालीफ़त 1000 के करीब हैं।

इमाम इब्ने जरीर ने अपनी ज़िन्दगी में 3,58,000 अवराक़ (पन्ने) लिखे।

अल्लामा बाक़्लानी ने सिर्फ़ मोतज़िला के रद्द में 70000 अवराक़ लिखे।

इमाम सुयूती की तसानीफ़ की तादाद 500 के करीब है जिनमें बहुत सी कई जिल्दों पर मुश्तमिल हैं।

इमाम गज़ाली ने 78 किताबें लिखी जिनमें से सिर्फ़ एक किताब 40 जिल्दों की है।

मशहूर तबीब इब्ने सीना की भी कई किताबें हैं जो कई जिल्दों पर मुश्तमिल है।

हाफ़िज़ इब्ने कसीर अस्कलानी की एक किताब 14 जिल्दों में है, एक 12 जिल्दों में है और एक 5 जिल्दों में है और इसके अलावा भी कई किताबें आपकी हैं।

इमाम-ए-अहले सुन्नत, सरकार आला हज़रत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, इमाम अहमद रज़ा रहीमहुल्लाह ने 1000 से ज़्यादा किताबें तस्वीफ़ फरमायी।

(ماخوذ از ارشاد الحیاری و علم و علما کی اہمیت)

अल्लाह त्आला इन बुजुर्गों के सद्के हमें भी लिखने की सलाहियत अता फरमाए (आमीन)

अब्दे मुस्तफ़ा

उलमा अम्बिया के वारिस हैं

क़ुरआन -ओ- अहादीस में मुताअ'दिह मक्रामात पर उलमा -ए- हक़ की अज़मत -ओ- अहमियत को बयान किया गया है। कहीं उलमा की ताज़ीम को अल्लाहो रसूल की ताज़ीम करार दिया गया है तो कहीं उलमा का ज़िक्र फ़िरिशतो के साथ किया गया है!

उलमा की शानो शौकत का क्या कहना के खुद आमीना के लाल, रसूल -ए- बेमिसाल, नबी -ए- करीम ﷺ ने इन्हें अपना वारीस बनाया है।

हदीस -ए- पाक में इरशाद -ए- नबवी है :-

اب العلماء ورثة الانبياء

तर्जुमा: बे शक उलमा अम्बिया के वारिस हैं।

(ملقطاً: سنن ابی داؤد، ج 2، کتاب العلم، ج 3641 وابن ماجه، ج 1، ح 223)

इस रिवायात को पढ़ कर बाज़ लोगो को शुब्हा हो सकता है के यहाँ उलमा से मुराद कौन हैं? क्या इस से सिर्फ औलिया -ए- दीन मुराद हैं या हर आलिम -ए- दीन?

इस ज़िम्न में हम फतावा रज़विया से एक इक्तेबास पेश करते हैं, मुलाहिज़ा फरमाये :-

इमाम -ए- अहले सुन्नत, आला हज़रत रहिमहुल्लाह से दो लोगो के मुताल्लिक़ सवाल हुआ जिस में से ज़ैद का कहना है के "उलमा अम्बिया के वारिस हैं" में उलमा -ए- शरीअत व तरीक़त दोनो दाखिल है और जो शरीअत व तरीक़त का जामे है वो विरासत के अज़ीम मर्तबे पर फ़ाइज़ है जबकि (दूसरे शख्स) अम्र का बयान है के शरीअत तो बस नाम है चंद फ़राइज़ व वाजिबात व सुनन व मुस्तहिब्बात व चंद मसाइल -ए- हलाल -ओ- हराम का और तरीक़त नाम है वुसूल इल्लल्लाह (अल्लाह का क़ुर्ब हासिल करने) का और इस में हक़ीक़त -ए- नमाज़ वगैरा मुनक्शीफ़ होती है तरीक़त बहरे नापेदा किनार (बिना किनारे का समन्दर) है और दरया -ए- ज़खार (मौजे मारता हुआ दरया) है वो इस दरया के मुकाबले में एक क़तरा है।

विरासत -ए- अम्बिया का यही वुसूल इल्लल्लाह मक़सूद व मन्शा है और यही शान -ए- रिसालत -ओ- नबूवत का तकाज़ा है, इसी के लिए वो मअ'बूस हुए।

ज़ाहिरी उलमा किसी तरह इस विरासत के काबिल नहीं हो सकते और न वो उलमा -ए- रब्बानी है.....अलख

आलाहज़रत रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया के ज़ैद का क़ौल हक़ व सहीह और अम्र का ज़ैमे बातिल व क़बीह व इल्हाद -ए- सरीह है (अम्र के बयान का रद्द करते हुए मज़ीद फरमाते है के) शरीअत सिर्फ चंद अहकाम का ही नाम नहीं बल्कि तमाम अहकाम -ए- जिस्मो जान व रूह -ओ- क़ल्ब व जुमला उलूम -ए- इलाहिया व मआरिफ़ -ए- ना मुतनाहिया

को जामे है जिन में से एक एक टुकड़े का नाम तरीक़त व मारिफ़त है (मज़ीद लिखते है के) तरीक़त में जो कुछ मुनक़शिफ़ होता है वो शरीअत ही के इत्तेबाअ का सदका है।

हुज़ूर -ए- अकरम ﷺ ने उम्र भर जिस रास्ते की तरफ बुलाया तो उस का खादिम, उस का हामी और उस का आलिम क्यों कर उनका वारिस न होगा? हम पूछते है के अगर बिल्फ़र्ज शरीअत सिर्फ़ चंद अहकाम ही के इल्म का नाम हो तो ये इल्म रसूलुल्लाह ﷺ से है या किसी और से? इस्लाम का दावा करने वाला ये ज़रूर कहेगा के ये इल्म हुज़ूर ﷺ ही से है, फिर इसका आलिम हुज़ूर ﷺ का वारिस न हुआ तो किस का होगा?

इल्म उन का तरका है फिर इसे पाने वाला उनका वारिस न हो इस के क्या माना?

अगर ये कहे के इल्म तो ज़रूर उनका है मगर दूसरा हिस्सा यानी इल्मे बातिन इसने न पाया लिहाज़ा वारिस न ठहेरा तो ए जाहिल! क्या वारिस के लिए ये ज़रूरी है के मोरिस का कुल माल पाए? यूँ तो आलम में कोई सिद्दीक़ उनका वारिस न ठहेरेगा और इरशाद -ए- अक़दस ﷺ "उलमा अम्बिया के वारिस है" गलत बन कर मुहाल हो जायेगा के उनका कुल इल्म तो किसी को मिल ही नहीं सकता।

(ملقطاً وملخصاً: مقال العرفاء باعزاز شرع و علماء - یہ رسالہ فتاویٰ رضویہ کی 26 ویں جلد میں موجود ہے)

मज़कूरा इत्तेबास के मुताअले से ये खलजान दूर हो जाना चाहिए के अम्बिया के वारिस कौन से उलमा है।

अब्दे मुस्तफ़ा

इब्लीस की बीवी का नाम

एक शख्स ने इमाम शयबी रदिएल्लाहु त्आला अन्हु से पूछ लिया कि इब्लीस की बीवी का क्या नाम था?

अब बताइये कि इसका जवाब जानकर उस शख्स को क्या फायदा होता? क्या ये अक्राइद का हिस्सा है या कोई ज़रूरी मस'अला है?

इमाम शयबी रदिएल्लाहु त्आला ने भी सवाल के जैसा ही जवाब अता फरमाया। आपने फरमाया कि इब्लीस के निकाह में मैं शरीक नहीं हो पाया था, इसलिये (उसकी बीवी के) नाम से वाकिफ़ नहीं।

(المراح فی المزاج، ابوالبرکات بدرالدین محمد شافعی، ص 69، ملخصاً)

हमें चाहिये कि जब उल्मा से सवाल करने का मौका मयस्सर आये तो फालतू सवाल करके वक़्त को बरबाद ना किया जाये बल्कि ज़रूरी सवाल किया जाये जिसका जवाब मुफीद साबित हो

अब्दे मुस्तफ़ा

वो जो ना थे तो

इमाम -ए- आजम, इमाम अबु हनीफा अलैहिर्रहमा लिखते हैं के :-

انت الذى لولاك ما خلق امرؤ

كلا ولا خلق الورى لولاك —

यानी आप ﷺ की ज़ात वो मुकद्दस ज़ात है के अगर आप ﷺ ना होते तो कोई फ़र्दे बशर पैदा न होता बल्कि सिरे से किसी मख्लूक की तखलीक ही ना होती

इसी फ़िक्र के जलवे इमाम -ए- अहले सुन्नत, आलाहज़रत रहिमहुल्लाह के कलाम में भी झलकते है, चुनान्चे आप लिखते है :-

वो जो ना थे तो कुछ ना था

वो जो ना हो तो कुछ ना हो

जान है वो जहान की

जान है तो जहान है

(माخوذ از مضمون "کلام رضائیں فکر بو حنیفہ کے جلوے" محرر شیخ الحدیث مولانا محمد حنیف حبیبی مصباحی، ملخصاً)

अब्दे मुस्ताफ़ा

दुआ -ए- मुस्तफा ﷺ और हज़रत अमीर -ए- मुआविया

नबीए करीम ﷺ ने हज़रत अमीर -ए- मुआविया रदिअल्लाहो त'आला अन्हु के लिए दुआ फरमाई के ए अल्लाह! इसे हादी व महदी बना, इसे हिदायत दे और इस के ज़रिये लोगों को हिदायत दे।

- (1) سنن ترمذی، ج 5، ص 687، ر 3842
- (2) التاريخ الكبير، ج 5، ص 240، ر 791
- (3) الطبقات الكبرى، ج 7، ص 292، ر 3746
- (4) مسند احمد بن حنبل، ج 29، ص 426، ر 1789
- (5) التاريخ الكبير (السفر الثاني)، ج 1، ص 349
- (6) الآحاد والمثاني، ج 2، ص 358، ر 1129
- (7) السنة، ج 2، ص 450، ر 697، 699
- (8) معجم الصحابة، ج 4، ص 490، ر 1948
- (9) معجم الصحابة، ج 2، ص 146
- (10) المعجم الاوسط، ج 1، ص 205، ر 656
- (11) مسند الشاميين، ج 1، ص 181، ر 311
- (12) الشريعة، ج 5، ص 2436، ر 1915
- (13) طبقات المحرّثين، ج 2، ص 343
- (14) فوائد، ص 211، ر 452
- (15) تاريخ اصبحان، ج 1، ص 221

- (16) معرفة الصحابة، ج4، ص1836، ر4634 (16)
- (17) حلية الاولياء، ج8، ص358 (17)
- (18) جزء في احاديث من مسموعات، ص51 (18)
- (19) تالى تلخيص المتشابهة، ج2، ص539، ر328 (19)
- (20) المحجة في بيان المحجة وشرح عقيدة اهل السنة، ج2، ص404، ر379 (20)
- (21) تاريخ دمشق، ج59، ص80 تا 83 (21)
- (22) الاحكام الشرعية الكبرى، ج4، ص428 (22)
- (23) جامع الاصول، ج9، ص107 (23)
- (24) اسد الغابة في معرفة الصحابة، ج5، ص155، ر4985 (24)
- (25) تهذيب الاسماء واللغات، ج2، ص104 (25)
- (26) مشكوة المصانيع، ج3، ص1758، ر6244 (26)
- (27) تهذيب الكمال في اسماء الرجال، ج17، ص322 (27)
- (28) سير اعلام النبلاء، ج3، ص125، ر126 (28)
- (29) معجم الشيوخ الكبير، ج1، ص155 (29)
- (30) تاريخ اسلام، ج4، ص301 (30)
- (31) الوافى بالوفيات، ج18، ص124 (31)
- (32) جامع المسانيد، ج5، ص536 (32)
- (33) البدايه والنهايه، ج8، ص129 (33)
- (34) اتحاف المهرة بالفوائد المبتكرة من اطراف العشرة، ج10، ص625، ر13513 (34)
- (35) اطراف المسند، ج4، ص268، ر5869 (35)

تاریخ الخلفاء، ص 152 (36)

الصواعق المحرقة، ص 310 (37)

مکتوبات (امام مجدد الف ثانی)، مکتوب 251، دفتر اول، ج 1، ص 58 (38)

انسان العیون، ج 3، ص 136 (39)

سمط النجوم، ج 3، ص 155 (40)

ازالة الخفاء، ج 1، ص 571، 572 (41)

الناهیة، ص 15 (42)

ख्याल रहे! ये दुआ उस ज़ात ने फरमाई है जिसके गुलाम मुस्तजिबुदावात है

(माخذ: من هو معاوية از علامه لقمان شاهد صاحب قبله)

अब्दे मुस्तफ़ा

हज़रते अमीर -ए- मुआविया मोमिनो के मामू हैं

हज़रते अमीर -ए- मुआविया रदिअल्लाहो त'आला अन्हु नबी - ए- करीम ﷺ की ज़ौजा सैयदा उम्मे हबीबा बन्ते अबु सुफियान के भाई है लिहाज़ा मोमिनो की माँ के भाई मोमिनो के मामू हुए और कई मोतबर उलमा -ए- किराम ने ये बात सिर्फ लिखी ही नहीं बल्कि इस पर ऐतेराज़ करने वालो को मुंह तोड़ जवाब भी दिया है।

السنة، ج 2، ص 434، ر 659 (1)

ایضاً، ر 658 (2)

ایضاً، ص 433، ر 657 (3)

- (4) اسكات الكلاب العاوية بفضائك خال المؤمنين معاوية، ص 75 (4)
- (5) معاوية بن ابى سفيان شخصيته وعصره الدولة السفينانية، ص 214 (5)
- (6) الشريعة، ج 5، ص 2448، ر 1930 (6)
- (7) تفسير ابن عباس، تحت تفسير سورة ممتحنة، آيت نمبر 7 (7)
- (8) الثقات للعلجلى، ص 127، 128، ر 218 (8)
- (9) البدء والتاريخ، ج 5، ص 13 (9)
- (10) ايضاً، ص 149 (10)
- (11) الشريعة، ج 5، ص 2431، 2448، ر 1930 (11)
- (12) الاعتقاد، اعتقاد فى الصحابة، ص 43 (12)
- (13) الحجى فى بيان المحجى وشرح عقيدة اهل السنة، ج 1، ص 248 (13)
- (14) الا باطيل والمناكير والصحاح والمشاهير، ص 116، ر 191 (14)
- (15) كتاب الاربعين فى ارشاد السائر الى منازل المتقين والاربعين الطائفة، ص 174 (15)
- (16) تاريخ دمشق، ج 59، ص 55، ر 7510 (16)
- (17) مثنوى مولوى معنوى، دفتر دوم، بيدار كردن ابليس معاوية را كه بر خيز كه وقت نماز بياگاه شد، صفحه نمبر 63 (17)
- (18) مر قاة المفاتيح، ج 4، ص 1557 (18)
- (19) مر آة المناجى، ج 3، ص 320 (19)
- (20) امير معاوية كى حالات، پہلا باب، ص 40 (20)
- (21) لعمرة الاعتقاد، ص 40 (21)
- (22) مختصر تاريخ دمشق لابن عساكر، ج 2، ص 284 (22)
- (23) البدايه والنهائيه، ج 4، ص 163 (23)

ایضاً، ج 8، ص 125 (24)

اتعاظ الخفاء باخبار الائمة الخ، ج 1، ص 131 (25)

الصواعق المحرقة، ص 355 (26)

مرقاۃ المفاتیح، ج 8، ص 3258، ر 5203 (27)

غذاء الالباب، ج 2، ص 457 (28)

تحقیق الحق از پیر مہر علی، ص 159 (29)

فیضان سنت، ص 937، 938 (30)

(ماخوذ از من هو معاویہ مصنفہ علامہ لقمان شاہد صاحب قبلہ)

अब्दे मुस्तफ़ा

इमाम आमश और किस्सा गो मुकर्रि

जब इमाम आमश रहीमहुल्लाह बसरा गये तो वहाँ की जामा मस्जिद में तशरीफ ले गये।

आपने मस्जिद में देखा कि एक किस्सा गो शख्स ये बयान कर रहा था कि "हज़रत आमश से हज़रत अबु इस्हाक ने रिवायत किया और हज़रत आमश ने अबु वायिल से रिवायत किया....."

ये सुनकर इमाम आमश रहीमहुल्लाह हल्के (महफिल) के दरमियान खड़े हो गये और बाजू बुलंद करके बगल के बाल उखाड़ने लगे!

जब उस क्रिस्सा गो मुकर्रिर ने इमाम आमश को देखा तो कहने लगा "ए बूढ़े इन्सान! क्या तुझे इतनी भी हया नहीं कि हम यहाँ ईल्म की महफिल में बैठे है और तू ऐसा काम कर रहा है?"

इमाम आमश ने फरमाया कि मै जो काम कर रहा हूँ वो उससे बेहतर है जो तुम कर रहे हो!

वो बोला कैसे?

इमाम आमश रहीमहुल्लाह ने फरमाया:

इसलिये कि मै एक सुन्नत अदा कर रहा हूँ और तू झूठ बोल रहा है,

मै ही आमश हूँ और जो कुछ तुम बोल रहे थे उसमे से कुछ भी मैने तुमसे बयान नहीं किया ।

जब लोगों ने इमाम आमश रहीमहुल्लाह की बात सुनी तो उस क्रिस्सा गो मुकर्रिर से हटकर आपके गिर्द जमा हो गये और अर्ज करने लगे कि "ए अबू मुहम्मद! हमें अहादीसे मुबारका सुनाइये"

(تحذير الخواص للسيوطي، الفصل العاشر في زيادات، ص 14 به حواله قوت القلوب، ج 1، ص 723، ملخصاً)

अब्दे मुस्ताफ़ा

लाख गुनहगार है लेकिन मेरे सहाबा का गुस्ताख तो नहीं

इमाम अहमद बिन हम्बल रहीमहुल्लाह के पड़ोस में एक फासिक्रो फाजिर शख्स रहता था।

एक दिन उसने इमाम अहमद बिन हम्बल रहीमहुल्लाह को सलाम किया तो आपने सहीह से जवाब ना दिया और नाखुशी का इज़हार किया।

उस शख्स ने कहा : ए अबु अब्दुल्लाह! आप मुझसे नाखुश क्यों हैं? आपको मेरे (गुनाहों के) बारे में जो कुछ मालूम है, एक ख्वाब देखने के बाद मैं उससे तौबा कर चुका हूँ।

इमाम अहमद बिन हम्बल रहीमहुल्लाह ने फरमाया क्या ख्वाब देखा?

उस शख्स ने कहा : मुझे ख्वाब में जाने जहाँ, सरवरे कौनो मकाँ ﷺ की इस तरह ज़ियारत हुई कि आप ﷺ ज़मीन के एक बुलन्द हिस्से पर तशरीफ फरमा हैं और बहुत से लोग नीचे बैठे हुए हैं उनमें से एक एक शख्स उठकर आप ﷺ की खिदमत में हाज़िर होता है और अर्ज़ करता है कि हुज़ूर मेरे लिये दुआ फरमायें, आप ﷺ हर एक के लिये दुआ फरमाते। वहाँ मौजूद तमाम लोगों ने दुआ करवायी, सिर्फ मैं बाकी रह गया।

मैंने खड़े होने का इरादा किया लेकिन अपने बुरे आमाल की बिना पर शरमा गया और मुझे उठने की हिम्मत ना हुई।

रहमते आलम ﷺ ने इरशाद फरमाया : ए फुलाँ, तू उठ कर हमारे पास क्यों नहीं आता, हमसे दुआ की दरख्वास्त क्यों नहीं करता? ताकि हम तेरे लिये भी दुआ करें।

मैंने अर्ज़ कि या रसूलल्लाह ﷺ मेरे करतूत बहुत बुरे हैं जिसकी वजह से मैं शर्मिन्दा हूँ और ये शर्मशारी मुझे खड़ा होने से रोक रही है।

सुल्ताने दो जहाँ ﷺ ने इरशाद फरमाया : अगर शर्म तुझे खड़ा होने से रोक रही है तो हम तुम्हें कहते हैं कि उठकर हमसे दरख्वास्त करो, हम तुम्हारे लिये दुआ करेंगे (सुब्हान अल्लाह) क्यों कि तुम (गुनहगार तो हो लेकिन) हमारे किसी सहाबी को गाली नहीं देते (उनकी बुराई नहीं करते)।

मैं उठकर खड़ा हो गया, आप ﷺ ने मेरे लिये भी दुआ फरमायी, मैं जब बेदार हुआ तो मुझे अपने तमाम बुरे कामों से नफरत हो चुकी थी।

इमाम अहमद बिन हम्बल रहीमहुल्लाह अपने शागिर्दों को हुक्म दिया करते थे कि इस हिकायत को याद कर लो और इसे बयान किया करो क्योंकि ये फायदेमंद है।

(انظر: مصباح الظلام به حواله طبقات الحنابلة از قاضی ابویعلیٰ حنبلی، 1/118)

अल्लाह त्आला हमें सहाबा-ए-किराम की सच्ची मुहब्बत अता फरमाए और उनके गुस्ताखों की सोहबत से बचाये (आमीन)

अब्दे मुस्तफ़ा

अल्लामा इब्ने हजर मक्की और हज़रत अमीर -ए- मुआविया

मशहूर मुहदिस, शैखुल इस्लाम, इमाम इब्ने हजर मक्की शाफ़ई रहमतुल्लाहि त'आला अलैह (मुतवप्फा 979 हिजरी) फरमाते हैं के बिला शुब्हा सय्यीदुना मुआविया रदिल्लाह त्आला अन्हु नसब, कराबत -ए- रसूल, हिल्म और इल्म के ऐतबार से अकाबीर सहाबा में से हैं।

पस इन अवसाफ की वजह से जो आपकी ज़ात में बिल इजमा पाए जाते हैं वाजिब ज़रूरी हैं के आपसे मुहब्बत की जाये।

(تطهير الجنان واللسان عن الخطور والتفوه بثلث سيدنا معاوية بن أبي سفيان، صفحه نمبر 3 به حواله من هو معاوية)

अब्दे मुस्तफ़ा

आला हज़रत और तक्ररीर

इमाम -ए- अहले सुन्नत, आला हज़रत रहिमहुल्लाह ज़्यादा वाज़ न फ़रमाया करते, आप का मामूल था कि साल में तीन वाज़ मुस्तकिलन फ़रमाया करते।

हर किसी की तक्ररीर नहीं सुनते थे:-

हज़रत अल्लामा मुफ़्ती अमजद अली आज़मी रहिमहुल्लाह फ़रमाते हैं के आला हज़रत की आदत थी के दो तीन आदमियों के इलावा किसी की तक़रीर नहीं सुनते थे उन दो तीन आदमीयो में मैं भी एक था।

आलाहज़रत ये इरशाद फ़रमाया करते थे के उमूमन मुकर्रिरीन और वायेज़ीन में इफ़रात व तफ़रीत होती है, अहादीस के बयान करने में बहुत सी बातें अपनी तरफ से मिला दिया करते हैं और इन को हदीस करार दिया करते हैं जो यक़ीनन हदीस नहीं हैं, अलफ़ाज़ -ए- हदीस की तफ़सीर व तशरीह और इस में बयान -ए- निकात अग़्रे आखिर हैं और ये जाएज़ हैं मगर नफ़्स -ए- हदीस में इजाफ़ा और जिस शै को हुज़ूर ﷺ ने ना फ़रमाया हो उसका हुज़ूर ﷺ से निस्बत करना यक़ीनन हदीस घढ़ना है जिस पर सख़्त वर्ईद वारिद है लिहाज़ा मैं ऐसी मजलिस में शिरकत पसंद नहीं करता जहा इस किस्म की खिलाफ - ए- शरह बात हो

(ملخصاً: حیات اعلیٰ حضرت و تذکرہ اعلیٰ حضرت)

अब्दे मुस्तफ़ा

हुज़ूर ग़ौसे पाक और धोबी का झूटा वाकिया

बयान किया जाता है के हुज़ूर ग़ौसे पाक अलैहिर्रहमा का एक धोबी था, जब उस का इंतैक़ाल हुआ तो क़ब्र में फिरिश्तो ने उस से सवाल किए जैसा के सब से करते हैं।

उस ने हर सवाल के जवाब में कहा के "मैं ग़ौसे पाक का धोबी हूँ" और उसे बख़्श दिया गया।

इस रिवायात के मुताल्लिक़ फ़कीह -ए- मिल्लत, हज़रत अल्लामा मुफ़्ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी रहिमहुल्लाह लिखते हैं के ये रिवायात बे अस्ल है, इसका बयान करना दुरुस्त नहीं लिहाज़ा जिस ने इसे बयान किया वो इस से रुजू करे और आईन्दा इस रिवायात के ना बयान करने का अहेद करे, अगर वो ऐसा ना करे तो किसी मोअतमद किताब से इस रिवायात को साबित करे

(انظر: فتاویٰ فقیہ ملت، کتاب الشقی، ج 2، ص 411، ط شبیر برادرز لاہور، س 2005ء)

شارہے بخاری، ہجرات اہللاما موفی شریف اول ہک امجدی الہیرہما اس ریاات کے موالیکر لیکتے ہ کے یہ ہکایت نا مینے کسی کیتااب میں دخی ہ اور نا کسی سے سنی ہ

اهادیس میں تسریہ ہ کے اگر (مرنے والا) مومین ہوتا ہ تو کر کے تینوں بونیادی سوالو کا جواب دے دتا ہ، موناقر یا کافر ہوتا ہ تو یہ کھتا ہ کے ہای ہای میں نہیں جانتا لہاذا یہ ریاات ہدیس کے خیلاف ہ مگر یہ بات ہک ہ کے ہجرات -ع- اولیا -ع- کیرام، اہمما -ع- دین، بوجونی دین اپنے مریدین اور موالیکرین کی کر میں نکیرن کے سوالاات کے ورتت شریف لاتے ہ اور جواب میں آسانی پیدا کرتے ہ

(ملخصاً وملتطاً: فتاویٰ شارح بخاری، کتاب العقائد، ج 2، ص 125، ط دائرة البرکات گوسی، س 1433ھ)

موفی -ع- آجم ہلینڈ، ہجرات اہللاما موفی اہدول واجید کادری رهمہللاہ ماکورا ریاات کے بارے میں لیکتے ہ کے گالبن یہی واکیا یا اس کے میل "تفریہل خاتیر" میں ہ لکین اس کے بیان میں تہکریک جری ہ، یں ہی مبہم تیر پر بیاا تویہ کے بیان کرنا خیلاف -ع- ہتیاات ہ جس سے بچنا جری ہ

(انظر: فتاویٰ یورپ، کتاب الصلوة، ص 220)

ہجرات مولانا مہمد اجمل اتاری ساہب اس ریاات کو نکل کرنے کے باء فرکیہ -ع- میللت کا کرایل بیان کرتے ہ کے ریاات -ع- ماکورا بے اسل ہ، اس کا بیان کرنا دُرست نہیں لہاذا جس نے اسے بیان کیا وہ اس سے رجو کرے.....الک

(انظر: امام الاولیاء، ص 70، ط مکتبہ اعلیٰ حضرت لاہور، س 1433ھ)

اے موفی

OUR OTHER PAMPHLETS

